Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 11, Issue 3&4 - 2026, Pg. No. 91-93
Peer Reviewed Journal

Short Review Article

वैदर्भी हिंदी साहित्य

ए. अनुराधा
पीजीटी हिंदी, एमजेपीटीबीसीडब्ल्यूआरएस (बालक), मेदक, तेलंगाना, भारत ।
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202628

I N F O

E-mail Id:
anuradhaakula101@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/
How to cite this article:
ए. अनुराधा, वैदर्भी हिंदी साहित्य, Anu: a, Mul, Int, Jour, *2026*; 11(3&4): 91-93.
Date of Submission: 2026-10-23
Date of Acceptance: 2026-11-03

A B S T R A C T

वैदर्भी हिंदी साहित्य महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में विकसित हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण धारा है। इस क्षेत्र में हिंदी साहित्य के आरंभिक विकास में संत साहित्य की उल्लेखनीय भूमिका रही। महानुभाव संप्रदाय और वारकरी संप्रदाय ने हिंदी की प्रारंभिक साहित्यिक परंपरा को समृद्ध किया। आधुनिक काल में विदर्भ के लेखकों ने हिंदी कविता, कहानी, उपन्यास और निबंध के विकास में योगदान दिया। प्रस्तुत शोधपत्र में वैदर्भी हिंदी साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास-क्रम, प्रमुख प्रवृत्तियों तथा साहित्यिक योगदान का परिचयात्मक विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: वैदर्भी हिंदी, विदर्भ, संत साहित्य, महानुभाव संप्रदाय, वारकरी संप्रदाय

प्रस्तावना

विदर्भ महाराष्ट्र का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है। इसमें नागपुर, अमरावती, अकोला, वर्धा, यवतमाल, चंद्रपुर और भंडारा आदि जिले सम्मिलित हैं। यहाँ मराठी प्रमुख भाषा है, किंतु हिंदी का भी साहित्यिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक स्तर पर विशेष महत्त्व रहा है। वैदर्भी हिंदी साहित्य से आशय विदर्भ क्षेत्र में रचे गए हिंदी साहित्य तथा वहाँ विकसित हिंदी साहित्यिक गतिविधियों से है।

शोध के उद्देश्य

- वैदर्भी हिंदी के उद्भव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- संत काल से आधुनिक काल तक इसके विकास-क्रम का विश्लेषण करना।
- प्रमुख साहित्यकारों और उनकी कृतियों का परिचय देना।
- वैदर्भी हिंदी साहित्य की विशिष्ट प्रवृत्तियों को रेखांकित करना।

Copyright (c) 2026: Author(s). Published by Advanced Research Publications

उद्भव काल

वैदर्भी हिंदी साहित्य की प्रारंभिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए 12वीं–13वीं शताब्दी के महानुभाव संप्रदाय का उल्लेख महत्त्वपूर्ण है। सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी से संबंधित 'लीळाचरित्र' महानुभाव परंपरा का प्रमुख ग्रंथ है। इस परंपरा की भाषा और साहित्य में मराठी के साथ हिंदी तथा अन्य भाषिक रूपों के संपर्क के अध्ययन की संभावनाएँ दिखाई देती हैं।

इसके बाद वारकरी भक्ति परंपरा के संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ और संत तुकाराम का व्यापक प्रभाव रहा। संत नामदेव के हिंदी पद उत्तर भारत तक पहुँचे और उनकी वाणी के पद गुरु ग्रंथ साहिब में भी संकलित हैं। इन संत परंपराओं ने भक्ति, लोकभाषा और आध्यात्मिक विचारों के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मध्यकाल और आधुनिक काल

भोंसले शासन के समय नागपुर क्षेत्र राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बना। हिंदी के प्रचार-प्रसार को विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक और साहित्यिक प्रयासों से गति मिली। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में पत्र-पत्रिकाओं, साहित्यिक संस्थाओं तथा राष्ट्रीय आंदोलन ने हिंदी लेखन और हिंदी चेतना को प्रोत्साहित किया।

स्वतंत्रता के बाद नागपुर तथा अमरावती के उच्च शिक्षण संस्थानों में हिंदी अध्ययन और अध्यापन को संस्थागत आधार मिला। वर्धा स्थित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। महात्मा गांधी से प्रेरित राष्ट्रभाषा आंदोलन तथा विनोबा भावे जैसे विचारकों के प्रयासों ने भी हिंदी के सामाजिक और शैक्षिक प्रसार को बल दिया।

प्रमुख साहित्यिक विधाएँ

वैदर्भी हिंदी साहित्य के अध्ययन में कविता, गीत, ग़ज़ल, नई कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना और अनुवाद जैसी विधाओं पर विचार किया जा सकता है। क्षेत्रीय समाज, ग्रामीण जीवन, किसान और खेत-मज़दूरों की समस्याएँ, आदिवासी जीवन, सामाजिक परिवर्तन तथा राष्ट्रीय चेतना इन विधाओं के संभावित प्रमुख विषय रहे हैं। मराठी साहित्य से हिंदी में अनुवाद ने दोनों भाषाओं के साहित्यिक संवाद को भी समृद्ध किया है।

वैदर्भी हिंदी साहित्य की विशेषताएँ

- मराठी और हिंदी भाषाओं तथा संस्कृतियों का समन्वय।
- संत और भक्ति परंपरा का प्रभाव।
- ग्रामीण, कृषक और श्रमिक जीवन का चित्रण।
- राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक सुधार की भावना।
- मराठी से हिंदी में अनुवाद और साहित्यिक आदान-प्रदान।

निष्कर्ष

वैदर्भी हिंदी साहित्य विदर्भ क्षेत्र की बहुभाषिक और सांस्कृतिक पहचान का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में संत परंपराओं, भाषिक संपर्क, शिक्षा-संस्थानों, साहित्यिक गतिविधियों और राष्ट्रभाषा आंदोलन की भूमिका रही है। आधुनिक समय में इस साहित्य का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण, प्रमुख रचनाकारों और कृतियों की प्रमाणिक सूची तैयार करना तथा अप्रकाशित सामग्री का शोधपरक अध्ययन आवश्यक है। ऐसे प्रयास वैदर्भी हिंदी साहित्य की परंपरा को समझने और भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने में सहायक होंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. तिवारी, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास। (प्रकाशन-विवरण संस्करण के अनुसार जोड़ें।)
2. मिश्र, गणेशदत्त. महाराष्ट्र का हिंदी साहित्य। (प्रकाशन-विवरण सत्यापित करके जोड़ें।)
3. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के हिंदी-प्रचार संबंधी प्रकाशन।